



# Cambridge IGCSE™

---

**HINDI AS A SECOND LANGUAGE**

**0549/02**

Paper 2 Listening

**March 2020**

TRANSCRIPT

**Approximately 35–45 minutes**

---

---

This document has **10** pages. Blank pages are indicated.

**MALE:** अभ्यास 1: प्रश्न 1-6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

**FEMALE:** संवाद 1

**MALE:** \* होटल गुलाब निवास में आप सभी का स्वागत है। आप सब के लिए कमरों की व्यवस्था कर दी गई है। जल्दी से नाश्ता कर लें और तैयार हो जाएँ। पुष्कर मेले से संबन्धित ज़रूरी जानकारी और मानचित्र आपके कमरों में मौजूद हैं। आप चाहें तो निजी गाइड भी किराए पर ले सकते हैं। हम ठीक एक घंटे बाद मेले के लिए रवाना होंगे। मेले में अपने सामान का ध्यान रखें और अधिकृत दुकानों से ही चीज़ें खरीदें। मंदिर और सरोवर में प्रवेश करते समय शालीन कपड़ों में रहें। कोई समस्या हो तो आप मेरे या होटल के फ़ोन पर संपर्क कर सकते हैं। \*\*

[Pause 3 seconds]

[Repeat from \* to \*\*]

[Pause 10 seconds]

**FEMALE:** संवाद 2

**FEMALE:** महिला: \* हैलो!

पुरुष: हैलो ...!

महिला: जी? ... माफ़ कीजिए ... आप कौन बोल रहे हैं?

पुरुष: आप को किस से बात करनी है?

महिला: जी, अनिल से। अनिल मनचंदानी!

पुरुष: देखिए, यह उनका नंबर नहीं है। आपने कौन सा नंबर डायल किया था?

महिला: ओह, माफ़ कीजिए। क्या यह 9878685847 नहीं है?

पुरुष: जी, नंबर तो सही है। लेकिन अनिल मनचंदानी का नहीं है।

महिला: लेकिन मेरी तो परसों ही उनसे बात हुई है?

पुरुष: पता नहीं। यह नंबर तो बरसों से मेरा है! \*\*

[Pause 3 seconds]

[Repeat from \* to \*\*]

[Pause 10 seconds]

**MALE:** संवाद 3

**FEMALE:** \* शिमला में अगले सप्ताह मिला-जुला मौसम रहने की संभावना है। जाखो पहाड़ी और आसपास की चोटियों पर सोमवार को तेज़ धूप खिली रहेगी लेकिन बुधवार को बादल छाए रहेंगे और तेज़ हवाओं के साथ थोड़ी बर्फ़बारी भी हो सकती है। पंजाब और राजस्थान में दबाव बढ़ने के कारण शनिवार और रविवार को एक बार फिर तेज़ धूप खिलेगी लेकिन शुक्रवार को मौसम ठंडा रहेगा। शिमला और आसपास की पहाड़ियों पर गरज के साथ छोटे पड़ने की संभावना बनी रहेगी। \*\*

[Pause 3 seconds]  
[Repeat from \* to \*\*]  
[Pause 10 seconds]

**MALE:** संवाद 4

**FEMALE:** महिला: \* भाई साहब, एक कमरा किराए पर लेना है।

पुरुष: केवल कमरा चाहिए या उसके साथ रसोई भी।

महिला: जी हाँ, रसोई के साथ-साथ अपनी बालकनी या छत भी हो तो अच्छा रहेगा।

पुरुष: किसी कोठी में लेना चाहेंगी या फ्लैट में?

महिला: सब किराए और जगह पर निर्भर करता है। वैसे सुरक्षा मेरी सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

पुरुष: तब तो कोठी ठीक रहेगी। एक-दो दुख्खतियाँ दिखा सकता हूँ। लेकिन किराया ज़्यादा लगेगा।

महिला: कोई बात नहीं, दिखा तो दीजिए। \*\*

[Pause 3 seconds]  
[Repeat from \* to \*\*]  
[Pause 10 seconds]

**FEMALE:** संवाद 5

**MALE:** \* भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान मिताली राज को देश का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया है। भारत को महिला क्रिकेट विश्व कप के फ़ाइनल में पहुँचाने में मिताली राज का अहम योगदान था। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पी वी सिंधु को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का खिताब मिला है। जबकि दूसरे बैडमिंटन स्टार किदाम्बी श्रीकांत को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुना गया है। मिताली राज अपना पुरस्कार लेने के लिये समारोह में मौजूद नहीं थीं। इसलिए उनका पुरस्कार उनके माता-पिता ने लिया। \*\*

[Pause 3 seconds]  
[Repeat from \* to \*\*]  
[Pause 10 seconds]

**FEMALE:** संवाद 6

**MALE:** पुरुष: \* कहिए बहन जी, क्या सेवा करूँ?

महिला: पानी की बोतल मिलेगी, ठंडी?

पुरुष: ज़रूर मिलेगी। एक लीटर, दो लीटर या चार?

महिला: जी, दो लीटर वाली ही चलेगी।

पुरुष: और ... पान-वान नहीं लगवाएँगी?

महिला: कैसा पान लगाते हैं आप?

पुरुष: सादा, मीठा, मघई! जो आपको पसंद हो! ये देखिए, लगे रखे हैं!

महिला: ये सब तो काफ़ी बड़े लगते हैं। चलिए मघई ही लगा दीजिए! \*\*

[Pause 3 seconds]

[Repeat from \* to \*\*]

[Pause 10 seconds]

**MALE:** यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

**FEMALE:** अभ्यास 2: प्रश्न 7

नई दिल्ली के शंकर अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय की संग्रहपाल बॉबी निगम के साथ पत्रिका के संवाददाता प्रेम मेहरा की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

**MALE:** प्रेम: \* बॉबी निगम जी, हमारे बाल श्रोताओं की ओर से आज की मुलाकात में आपका स्वागत है।

**FEMALE:** बॉबी: धन्यवाद, प्रेम जी।

प्रेम: बॉबी जी, गुड्डे-गुड़ियाँ घर-घर में पाए जाते हैं। हम सब बचपन में उन से खेले हैं। हमने उनके नाच देखे हैं। लेकिन उनके अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय का विचार अपने-आप में अनूठा है। क्या आप बता सकती हैं इसे बनाने का विचार कहाँ से आया और इतनी सारी गुड़ियाँ जमा कैसे हुईं?

- बाँबी: प्रेम जी, गुड़िया संग्रहालय बनाने का विचार भारत के जाने-माने कार्टूनिस्ट शंकर पिल्लै का था। उन्हें हंगरी के एक राजनयिक ने एक गुड़िया भेंट की थी। उसी से उनके मन में दुनिया भर की गुड़ियाँ जमा करने का विचार आया और वे अपनी देश-विदेश की यात्राओं से लौटते समय वहाँ की गुड़ियाँ साथ लाने लगे।
- प्रेम: इस तरह तो बहुत सी गुड़ियाँ जमा हो गई होंगी। इतनी सारी गुड़ियों का वे करते क्या थे? उन्हें कहाँ रखते थे?
- बाँबी: शंकर पिल्लै को बच्चों से बहुत लगाव था और बच्चे गुड़डे-गुड़ियों से प्यार करते हैं। इसलिए उन्होंने गरीब बच्चों के लिए अपनी गुड़ियों की प्रदर्शनियाँ लगाना शुरू किया। ऐसी ही एक प्रदर्शनी में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू अपनी बेटी इंदिरा गाँधी के साथ गए थे। इंदिरा जी को इस प्रदर्शनी ने इतना प्रभावित किया कि उन्होंने शंकर पिल्लै को एक अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय बनाने के लिए कहा।
- प्रेम: लेकिन संग्रहालय में तो हजारों गुड़डे-गुड़ियाँ हैं। क्या ये सभी शंकर पिल्लै ने जमा किए थे?
- बाँबी: नहीं। लेकिन उनके द्वारा जमा किए गए गुड़डे-गुड़ियों की संख्या काफी बड़ी है। वैसे नेहरू जी और इंदिरा जी का भी इस संग्रहालय से काफी लगाव था। इसलिए उन्होंने सरकारी तौर पर भेंट में मिले सारे गुड़डे-गुड़ियों को इस संग्रहालय को दान कर दिया। उनसे प्रेरित होकर दुनिया भर के देशों के राजदूतों ने भी अपने-अपने देश के चुनिंदा गुड़डे-गुड़ियाँ संग्रहालय को दान किए जिसकी वजह से इतना विशाल और विविधता वाला संग्रह तैयार हो गया।
- प्रेम: वैसे यह संग्रहालय नई दिल्ली में है कहाँ पर बाँबी जी?
- बाँबी: प्रेम जी, अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग पर बाल पुस्तक न्यास की इमारत में स्थित है। आप शायद जानते ही होंगे कि बाल-पुस्तक न्यास की स्थापना भी शंकर पिल्लै ने ही की थी, जिसने भारत में बाल-साहित्य के विकास की नींव डाली थी। कुछ वर्षों बाद बाल-पुस्तक न्यास की इमारत में ही अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय की स्थापना कर दी गई और उसे शंकर पिल्लै की याद में शंकर गुड़िया संग्रहालय का नाम दिया गया।
- प्रेम: बाँबी जी, इस संग्रहालय की लोकप्रियता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। बच्चों से भी बड़ी संख्या में बड़े लोग इसकी प्रदर्शनियों में जाने लगे हैं। इसकी वजह क्या है?
- बाँबी: इसकी एक वजह तो यही है कि कम्प्यूटर खेलों और डिजिटल पात्रों की आज की आभासी दुनिया में गुड़डे-गुड़िया संग्रहालय की चीज़ें बनते जा रहे हैं। लोग इनमें अपने उस खोए बचपन को ढूँढने आते हैं जो उन्हें गुड़डे-गुड़ियों के जरिए परीकथाओं की खुशियों से भरी दुनिया में ले जाता था। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है जो बच्चों और बड़ों सभी को आकर्षित करता है।
- प्रेम: कहीं आप समाज और इतिहास की तरफ तो इशारा नहीं कर रहीं।
- बाँबी: जी, मैं उसी पहलू की बात कर रही थी। साहित्य, सिनेमा और संगीत की तरह गुड़डे-गुड़िया भी किसी देश, समाज और इतिहास के दौर के बारे में बहुत सी दिलचस्प बातें बता सकते हैं।

प्रेम: मसलन?

बॉबी: मिसाल के तौर पर भारत के विभिन्न राज्यों के गुड्डे-गुड़िया ज़्यादातर धार्मिक कथानकों और पात्रों पर आधारित हैं। राधा-कृष्ण की गुड़ियाँ, गण-गौर की गुड़ियाँ और कथक्कली के पात्रों की गुड़ियाँ। वैसे ग्रामीण और कबाड़ली जन-जीवन की झाँकियाँ पेश करने वाली गुड़ियाँ भी मौजूद हैं, जैसे पनिहारी की गुड़िया, गड़ियारे की गुड़िया या फिर सपेरों और मदारियों की गुड़ियाँ।

प्रेम: पश्चिमी देशों और चीन-जापान जैसे पूर्वी देशों की गुड़ियाँ कैसी हैं?

बॉबी: पश्चिमी देशों की गुड़ियों में राजकुमारियों, परियों और जहाज़ से यात्रा करने वाले व्यापारियों की गुड़ियों की संख्या ज़्यादा है। घुड़सवार कुलीनों और स्वेटर बुनती महिलाओं के गुड्डे-गुड़ियाँ भी खूब हैं। चीनी और जापानी गुड्डे-गुड़ियाँ रखवाली करते समुराई योद्धाओं और पारंपरिक पोशाक और छाते में इठलाती महिलाओं के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करती हैं।

प्रेम: बॉबी जी, दिल्ली के शंकर अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय के बारे में इतनी दिलचस्प जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

बॉबी: धन्यवाद। \*\*

[Pause 30 seconds]

**MALE:** अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]  
[Repeat from \* to \*\*]  
[Pause 30 seconds]

**MALE:** अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

**FEMALE:** अभ्यास 3: प्रश्न 8-15

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो की अंतरिक्ष वैज्ञानिक ऋतु सेमवाल के साथ पत्रकार आकाश दीप की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई गलती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]  
[Signal]  
[Pause 3 seconds]

**MALE:** आकाश: \* ऋतु सेमवाल जी, नए क्षितिज के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

ऋतु: धन्यवाद, आकाश जी।

आकाश: ऋतु जी, आपका रुझान चिकित्सा, वकालत और कला जैसे पारंपरिक विषयों की बजाए अंतरिक्ष विज्ञान की तरफ़ कब और कैसे हुआ?

ऋतु: आकाश जी, चाँद-तारों से मुझे बचपन से ही प्यार हो गया था। बचपन में घंटों घर की छत पर जाकर चाँद-तारों को निहारती रहती थी। तरह-तरह के सवाल मन में उठते। घर वालों से उनका जवाब न मिलने पर किताबें छानती फिरती। तभी मन में ठान ली थी कि इन रहस्यों की गुत्थियाँ खोलनी हैं। अंतरिक्ष विज्ञान पढ़ना है।

आकाश: घर वालों की राय क्या थी?

ऋतु: हमारा परिवार लखनऊ का एक मध्यवर्गीय परिवार था। फ़िज़ूलखर्ची के लिए कोई जगह नहीं थी लेकिन पढ़ाई पर पूरा जोर दिया जाता था। हमें अच्छे स्कूलों में पढ़ाया गया लेकिन ट्यूशन-कोचिंग कभी नहीं कराई गई। पिता रक्षा सेवा में थे। माँ कभी घर का काम करने के लिए नहीं कहती थीं। उनका एक ही सपना था कि बेटियाँ पढ़-लिख कर काबिल बनें। इसलिए दसवीं पास करने के बाद मैंने दोस्तों की सलाह से फ़ैसला किया कि मुझे अंतरिक्ष विज्ञान ही पढ़ना है।

आकाश: आपने काफ़ी कठिन विषय चुना। इसके लिए आपने अपने-आप को कैसे तैयार किया?

ऋतु: चाँद-तारों की दुनिया में दिलचस्पी तो थी ही, विज्ञान के समाचारों को ध्यान से पढ़ने लगी। अखबारों की कतरनें संभाल कर रखती और बाद में अपने अध्यापकों से उन पर बहस करती। बारहवीं के साथ ही भारतीय विज्ञान संस्थान में प्रवेश के लिए प्रतियोगिता की तैयारी शुरू कर दी थी। विज्ञान संस्थान में प्रवेश पाकर अंतरिक्ष इंजीनियरी की डिग्री हासिल कर ली। सौभाग्य से जैसे ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो से बुलावा आया, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

आकाश: लेकिन इसरो तो बेंगलुरु में है। आपको लखनऊ छोड़ कर बेंगलुरु जाना पड़ा होगा!

ऋतु: जी हाँ। माँ को चिंता थी कि बेटा इतनी दूर अकेली कैसे रहेगी। पर उन्होंने रोका नहीं, खुशी-खुशी जाने दिया और मैं दो दिन का सफ़र तय करके इसरो पहुँची। अपनी मंज़िल की ओर यह मेरा पहला क़दम था।

आकाश: कैसा लगा आपको वहाँ पहुँच कर?

ऋतु: मुझे लगा कि जैसे वाकई सितारों का जहाँ मिल गया। हालाँकि उन दिनों इसरो में बहुत कम महिला वैज्ञानिक काम करती थीं। लेकिन मुझे कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर काम करने का मौक़ा मिला जिनमें मंगलयान को मैं सबसे प्रमुख मानती हूँ।

आकाश: मंगलयान पर काम करने की ज़िम्मेदारी आपको कैसे मिली?

ऋतु: सब-कुछ अचानक ही हुआ था। हमारी एक महत्वपूर्ण परियोजना पूरी ही हुई थी कि मुझे बुला कर कहा गया कि मुझे मंगलयान पर काम करना है। मुझे मंगलयान का संचालन उपनिदेशक बनाया गया था और अभियान को 18 महीनों के भीतर पूरा करना था।

आकाश: मंगलयान अभियान की सबसे बड़ी चुनौती क्या थी?

ऋतु: सबसे बड़ी चुनौती यही थी हमें पहली बार में सफलता हासिल करनी थी। अमरीका, रूस, चीन और जापान सभी देश कोशिश कर चुके थे। लेकिन किसी देश का अभियान पहली बार में सफल नहीं हुआ था। अभियान की कामयाबी हमारे संचालन सॉफ्टवेयर पर निर्भर करती थी।

आकाश: तब तो काफी कड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी!

ऋतु: बस, पूछिए मत। सुबह-शाम समय का कोई हिसाब नहीं था। न कोई छुट्टी, न आराम। दस महीने पलक झपकते ही निकल गए। घर में बच्चे परेशान हो उठे थे। लेकिन दस महीने बाद मंगलयान का संचालन करने वाला महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर तैयार हो गया और फिर 24 सितंबर 2014 को वह घड़ी भी आई जिसने सारी थकान और शिकायतें दूर कर दीं। हमारा अभियान पहली बार में ही सफल हो गया और यह दुनिया का सबसे सस्ता मंगल अभियान था।

आकाश: मंगलयान की सफलता ने आपका नाम किया ही नहीं बल्कि बदल दिया!

ऋतु: जी हाँ। मज़ाक में लोग मुझे 'रॉकेट वुमन' कह कर बुलाने लगे। मुझे युवा वैज्ञानिक पुरस्कार भी मिला और चंद्रयान-दो की जिम्मेदारी भी।

आकाश: ऋतु सेमवाल जी, अपनी अंतरिक्ष विज्ञान यात्रा पर रोचक बातचीत के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

ऋतु: आपका भी धन्यवाद। \*\*

[Pause 30 seconds]

**MALE:** अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]  
[Repeat from \* to \*\*]  
[Pause 30 seconds]

**MALE:** अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

**FEMALE:** अभ्यास 4: प्रश्न 16-23

**FEMALE:** शिक्षा को श्रम से जोड़ने की ज़रूरत पर शिक्षाशास्त्री विनय मोहन के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]  
[Signal]  
[Pause 3 seconds]

**MALE:** \* मनुष्य हर बार सामने आई समस्या पर नए तरीके से सोच सकता है। हर मनुष्य अलग-अलग तरीकों से सोच सकता है। सोच पाने की इसी क्षमता को 'प्रत्युत्पन्न मति' कहते हैं। यही वजह है कि लाख प्रयासों के बावजूद वैज्ञानिक कृत्रिम बुद्धि को मनुष्य की क्षमता के बराबर नहीं बना पाए हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रत्युत्पन्न मति का सीधा संबंध शारीरिक श्रम से है। मनुष्य जब अपने हाथ से काम करता है तो उसका दिमाग लगातार सक्रिय रहता है और सोचता रहता है कि उस काम को कैसे कम ऊर्जा खर्च कर के किया जाए। इसी प्रयास में नए आविष्कार होते हैं। इसलिए अगर हम अपने युवाओं से रचनाशील होने की उम्मीद करते हैं, तो उनके प्रत्युत्पन्न मति का विकास पर ध्यान देना पड़ेगा और इसके लिए उन्हें शारीरिक श्रम में लगाना होगा। श्रम को जीवन का अंग बनाना होगा।

इस बात की समझ गाँधी जी जैसे चिंतकों को थी। इसीलिए गाँधी जी ने अपनी 'नई तालीम' योजना में शिक्षा को श्रम से जोड़ने की बात की थी। विद्यालयों को केवल पुस्तक आधारित बनाने के बजाय उन्हें दैनिक जीवन और उत्पादन से जोड़ने के पीछे शायद यही मकसद रहा होगा कि श्रम और प्रकृति के संयोग से मानव मस्तिष्क ज्यादा प्रत्युत्पन्नमति होगा और समाज में सही रचनात्मक सोच को विकसित कर पाएगा।

इसलिए श्रम से शिक्षा को जोड़ने के इस पंच को समझ लेना ज़रूरी है। समाजशास्त्रियों का कहना है कि बच्चों में अगर शुरू से ही घर और विद्यालय में काम करने की आदत डाली जाए तो उनमें श्रम के प्रति सम्मान और काम करने वालों के प्रति आदर तो होगा ही, इसका प्रभाव उनकी बौद्धिक क्षमता पर भी पड़ेगा। इससे कल का समाज बेहतर तो बनेगा ही, उन्हें भी इसको समझने में सहायता मिलेगी। लेकिन अगर उन्हें केवल प्रशिक्षित श्रमिक बनाने का प्रयास किया गया तो न वे प्रयोगधर्मी होंगे और न ही सामाजिक।

समय आ गया है कि शिक्षा पर खर्च बढ़ा कर हम भारत को पूँजी के लिए सस्ते श्रम का स्रोत न बना कर एक अन्वेषी समाज बनाएँ। देश की युवा जनसंख्या को केवल पूँजी कमाने का प्रशिक्षण देकर श्रमिक में बदल देना हमारे समाज के प्रति अपराध होगा। आने वाले समय में वही समाज आगे जा पाएगा, जो नई खोज कर सके और आने वाली बौद्धिक क्रांति का जनक बन सके।

इसके लिए हमारे पास हर तरह की क्षमता है और तकनीक भी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रयोग हुए थे, उनसे सीखने की ज़रूरत होगी। एक तरफ तो वे विद्यालय थे, जिनमें उच्च वर्ग के बच्चे पढ़ते थे और जहाँ जल्दी ही श्रम को शिक्षा से जोड़ना हेय माना जाने लगा था। दूसरी तरफ सामान्य सरकारी विद्यालय थे, जिनमें श्रम को महत्त्व तो दिया गया, लेकिन संसाधन पर्याप्त नहीं दिए गए।

इन दोनों के बीच एक और सफल प्रयोग हुआ। जवाहरलाल नेहरू और बिहार के कुछ मनीषियों ने प्रायोगिक तौर पर राँची के करीब नेतरहाट में एक विद्यालय खोला। इसमें प्रतियोगिता परीक्षा के द्वारा सामान्य परिवारों और यहाँ तक कि अति निर्धन परिवारों के बच्चों को लाया गया। गाँधी की नई तालीम और नेहरू की आधुनिक शिक्षा के बीच की कोई व्यवस्था बनाई गई। इस विद्यालय के लगभग पाँच हजार से ज्यादा छात्र भारत और दुनिया भर के अलग-अलग हिस्सों में उच्च आधुनिक पेशों में हैं। इस विद्यालय के ज्यादातर शिक्षकों और छात्रों का मानना है कि श्रम के साथ शिक्षा को जोड़ने का प्रयोग ही उनके विद्यालय की सबसे बड़ी देन है, क्योंकि इसका प्रभाव उनके जीवन दर्शन पर पड़ा है।

कुल मिला कर अगर भारत अपनी युवा पीढ़ी का लाभ पाना चाहता है, तो उसे यहाँ हुए अनेक प्रयोगों से श्रम और शिक्षा को जोड़ने का सबक लेने की ज़रूरत है। भारत को तकनीकी में प्रशिक्षित सस्ते श्रम के बदले एक ऐसे समाज को दुनिया के सामने रखने की ज़रूरत होगी जो अन्वेषी हो और जनहितैषी हो।\*\*

[Pause 30 seconds]

**FEMALE: अभ्यास 4 के इन विचारों को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]

[Repeat from \* to \*\*]

[Pause 30 seconds]

**FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**

This is the end of the examination.

---

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at [www.cambridgeinternational.org](http://www.cambridgeinternational.org) after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.